International Journal of Research - GRANTHAALAYAH
February 2026 14(2SCE)
समकालीन कला, साहित्य, संगीत एवं नृत्य का विज्ञान एवं समाज विज्ञान से अंतर्संबंध
www.granthaalayah.com

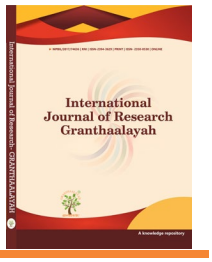

Original Article

THE INFLUENCE OF INDIAN CULTURE ON GLOBAL CULTURE

भारतीय संस्कृति का वैश्विक संस्कृति पर प्रभाव

Dr. Shail Shrivastava [1*]
[1] Professor, Political Science, Maharani Lakshmi Bai Government Girls College, Fort Building, Indore, Madhya Pradesh, India

ABSTRACT

English: Indian culture, considered the mother of all world cultures, is significant for its antiquity, spirituality, diversity, and global influence. Based on tolerance, moral values, and principles like "Atithi Devo Bhava," our Indian culture holds a special place in science, politics, medicine, economics, and all other social spheres. This culture is a unique blend of modernity with traditional traditions like spirituality and religious tolerance. Due to these characteristics, Indian culture has profoundly influenced global culture.
This paper attempts to highlight the various aspects in which Indian culture has influenced global culture, including life values, medicine, yoga, art, and literature.

Hindi: विश्व के सभी संस्कृतियों की जननी माने जाने वाली भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीनतम और जीवंत संस्कृति हैं। प्राचीन काल से हो भारतीय संस्कृति का प्रभाव विश्व भर में रहा है। "वसुधैव कुटुम्बकम" अर्थात सम्पूर्ण विश्व एक परिवार है, इस सिद्धान्त को प्रतिपादित करता हुआ भारत विश्व को हमेशा प्रेम और बंधुत्व का संदेश देता आया हैं। "वसुधैव कुटुम्बकम" और "अतिथि देवो भवरू" जैसे सिद्धांतो में बसी भारतीय संस्कृति में विश्वास, भावना, आस्था, दर्शन, परम्पराओं, रीतिरिवाजों, नैतिक मूल्यों का अत्याधिक महत्व रहा है। इस सत्य से इंकार नहीं किया जा सकता कि भौतिकता-वादी और वैज्ञानिक पाश्चात्य संस्कृति को स्वीकार करने वाले वैश्विक जनमानस को, न केवल प्रभावित किया है, बल्कि उसे अपनाने के लिये बाध्य भी किया है।

Keywords: Tolerance, Global Culture, Indian Culture, Philosophy, Yoga, वसुधैव कुटुम्बकम, संस्कृति, वैश्विक संस्कृति, आध्यात्म, दर्शन, योग, विज्ञान

प्रस्तावना

विश्व के सभी संस्कृतियों की जननी माने जाने वाली भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीनतम और जीवंत संस्कृति हैं। प्राचीन काल से हो भारतीय संस्कृति का प्रभाव विश्व भर में रहा है। "वसुधैव कुटुम्बकम" अर्थात सम्पूर्ण विश्व एक परिवार है, इस सिद्धान्त को प्रतिपादित करता हुआ भारत विश्व को हमेशा प्रेम और बंधुत्व का संदेश देता आया हैं। "वसुधैव कुटुम्बकम" और "अतिथि देवो भवरू" जैसे सिद्धांतो में बसी भारतीय संस्कृति में विश्वास, भावना, आस्था, दर्शन, परम्पराओं, रीतिरिवाजों, नैतिक मूल्यों का अत्याधिक महत्व रहा है। इस सत्य से इंकार नहीं किया जा सकता कि भौतिकता-वादी और वैज्ञानिक पाश्चात्य संस्कृति को स्वीकार करने वाले वैश्विक जनमानस को, न केवल प्रभावित किया है, बल्कि उसे अपनाने के लिये बाध्य भी किया है।

*Corresponding Author:
Email address: Dr. Shail Shrivastava (shrivastava.drshail@gmail.com)

Received: 18 December 2025; **Accepted:** 14 January 2026; **Published** 27 February 2026
DOI: 10.29121/granthaalayah.v14.i2SCE.2026.6738
Page Number: 135-138
Journal Title: International Journal of Research -GRANTHAALAYAH
Journal Abbreviation: Int. J. Res. Granthaalayah
Online ISSN: 2350-0530, **Print ISSN:** 2394-3629
Publisher: Granthaalayah Publications and Printers, India
Conflict of Interests: The authors declare that they have no competing interests.
Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.
Authors' Contributions: Each author made an equal contribution to the conception and design of the study. All authors have reviewed and approved the final version of the manuscript for publication.
Transparency: The authors affirm that this manuscript presents an honest, accurate, and transparent account of the study. All essential aspects have been included, and any deviations from the original study plan have been clearly explained. The writing process strictly adhered to established ethical standards.
Copyright: © 2026 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

संस्कृति और भारतीय संस्कृति

वस्तुतः संस्कृति का निर्माण आध्यात्म, रीतिरिवाज, धर्म, दर्शन ज्ञान, विज्ञान, कला, संस्कार, साहित्य बौद्धिक क्रियाओं, नैतिक मूल्यों आदि से होता है। इन सभी पक्षों में भारतीय संस्कृति की सम्रद्धता विश्व विदित है। अपनी इसी सांस्कृतिक सम्रद्धता के बल पर ही भारत विश्व गुरु बनने का स्वप्न देख रहा है। भारतीय संस्कृति की उदारता तथा समन्वयवादी गुणों ने अन्य संस्कृतियों को समाहित तो किया हैं, किंतु अपने अस्तित्व के मूल को भी सुरक्षित रखा है, तभी पाश्चात्य विद्वान अपने देश की संस्कृति को समझने हेतु पहले भारतीय संस्कृति को समझने का परामर्श देते है। Bharatdiscovery (n.d.) प्राचीनकाल से ही भारत की स्थिति अत्यधिक महत्वपूर्ण रही है। हिन्द महासागर के तट पर स्थित होने के कारण वह केन्द्रीय स्थित में रहा है। सुमात्रा, जावा, बाली, स्याम, म्यांमार, मलाया आदि देश भारतीय संस्कृति के संपर्क से ही सभ्य बने। Bharatdiscovery (n.d.)

वैश्विक संस्कृति

वैश्विक संस्कृति उन साझा मूल्यों मानदंडों, और प्रथाओं को संदर्भित करती हैं जो वैश्वीकरण की सतत प्रक्रिया से उत्पन्न होती है, जिसने 20वीं सदी के उत्तरार्द्ध के राष्ट्रों और संस्कृतियों के बीच पारस्परिक निर्भरता बढाई है। वैश्वीकरण की प्रकिया ने संस्कृति के बहुत से हिस्सों को व्यापारिक बना दिया हैं। भारतीय संस्कृति का विस्तार विभन्न रूपों में, मिथकों के रूप में, दंत कथाओं के रुप में, सामाजिक, नैतिक तथा अन्य भी कई रूपों में विदेशों में व्यापक रूप से विस्तार पा चूका हैं। वैश्वीकरण के इस दौर में अन्तराष्ट्रीय संबंधों में वृद्धि हुई है और एक देश की संस्कृति ने दूसरे देशों की संस्कृति को प्रभावित किया है। भूमंडलीकरण के इस दौर में भारतीय संस्कृति के व्यापक प्रभावों की चर्चा हो रही है। विश्व के अधिकतर राष्ट्र भारतीय संस्कृति को किसी न किसी रूप में अपना रहे हैं, यह आश्चर्य और सुखद अनुभूति है।

भारतीय संस्कृति का वैश्विक प्रभाव

भारतीय संस्कृति ने विश्व को आध्यात्म, धर्म, कला, विज्ञान, चिकित्सा, योग अहिंसा, सामाजिक तथा नैतिक मूल्यों, राजनीति, फैशन, पर्यटन आदि के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया है-

आध्यात्म और दर्शन- भारत की आध्यात्मिक और दार्शनिक संस्कृति का विस्तार अद्वितीय है। विश्व की मात्र कुछ ही ऐसी गाथायें हैं, जिन्होंने न केवल भारतीयों को बल्कि विश्व के जनमानस को इतना झकझोरा है, जितना कि हमारे धार्मिक ग्रन्थ रामायण और महाभारत ने। रामकथा भारतीय संस्कृति की वाहक है। रामकथा को दंत कथाओं से ऊपर उठाकर मानवीय जीवन में आत्मसात करने में विदेशी विचारकों का भी योगदान रहा है। इंडोनेशिया, मलेशिया, थाईलैंड, कम्बोडिया, सुदूर पूर्व के द्वीप समूहों में हमारे इन ग्रंथों ने गहरी छाप छोड़ी है। प्रत्येक कर्म का फल निश्चित होता है, यह अवधारणा आज वैश्विक नैतिक दर्शन का अंग बन चुकी है। आध्यात्मिकता के तथा धर्म के प्रतीक हमारे धार्मिक स्थल, मथुरा, वाराणसी, अयोध्या आज करोडों विदेशी लोगों के लिये एक अन्तराष्ट्रीय प्रतीक के रूप में स्थापित हो गये हैं। जापान जो कि आज तकनीकी द्रष्टि से बहुत सुद्रढ़ माना जाता है, वहां भी भारतीय संस्कृति की तरह ही एक भूमि पूजन की परंपरा है। वहां मकान बनाने से पहले "शिन्तो धर्म" की एक रस्म अदा की जाती है, जो हमारी भूमि पूजन जैसी ही है। Manthan Prakashan (2018–2019)। इंडोनेशिया में भी भारतीय संस्कृति परिलक्षित होती है। बोरो बुदुर (Borobudur) (बौध्द मंदिर) तथा प्रम्बानन (हिंदू मंदिर) जैसे विशाल मंदिर भारतीय स्थापत्य कला के उदहारण है। "जावा" में हिंदू धर्म की गहरी विरासत है, जो कला संस्कृति और त्यौहारों जैसे होली, दीपावली आदि में दिखती है। "बाली द्वीप" भी हिन्दू संस्कृति का एक जीवंत केंद्र हैं। बौद्ध धर्म ने भी अपने वैश्विक प्रसार में विशेष ख्याति प्राप्त की है। सम्राट अशोक के समय से ही बौद्ध धर्म का प्रसार बढा जो बढ़ते बढ़ते जापान, कोरिया, चीन, थाईलैंड तथा श्रीलंका की संस्कृति को भी प्रभावित करने में सफल रहा है।

आयुर्वेद और योग का वैश्विक प्रभाव

योग आज वैश्विक स्वास्थ्य के आंदोलन का हिस्सा बन चूका है। Feuerstein (2008)। "योग", विश्व को भारतीय संस्कृति की अनूठी देन है। विश्व के अधिकांश राष्ट्रों जैसे अफ्रीका, यूरोप, आस्ट्रेलिया तथा अन्य कई राष्ट्र में योग जीवन शैली का हिस्सा बन चुका है। "चरक संहिता" और "पतंजलि का योगसूत्र" का आज पूरे विश्व में अध्ययन किया जा रहा है। शल्य चिकित्सा, जड़ी बूटियों का ज्ञान भारत में ही विकसित हुआ। "सर्वे भवन्तु सुखिनरू सर्वे भवन्तु निरामयरू" का वाक्यांश मानवता का मूल्य प्रदर्शित करता है। योग विश्व में आकर्षण का केंद्र बन गया है। आज वैश्विक स्तर पर ध्यान की पद्यतियां अपनाई जा रही है। तनाव प्रबंधन और मानसिक स्वास्थ्य के लिए इसकी उपयोगिता निरंतर बढती जा रही है। संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा 21 जून को "अन्तराष्ट्रीय योग दिवस" घोषित किये जाने के कारण ये और भी अधिक मुखरित हुआ है। योग भारतीय संस्कृति का अभिन्न घटक है, जिसका लाभ पूरी दुनिया उठा रही हैं।

विज्ञान का वैश्विक विस्तार

दशमलव और शून्य का आविष्कार भारत में हुआ। विभिन्न विद्वानों के माध्यम से ये अवधारणाएं यूरोप पहुंची और आधुनिक विज्ञान का आधार बनी। रामानुजम, आर्यभट्ट जैसे वैज्ञानिकों के कार्यों ने विश्व को वैज्ञानिक क्षेत्र में मार्ग दिखाया। विज्ञान के क्षेत्र में भारत के योगदान की प्रासंगिकता बनी हुयी है। भारतीय पञ्चांग प्रणाली की उपयोगिता सर्वविदित है। खगोलीय गणनाओ, ज्योतिष सम्बन्धी जानकारी में, संस्कृतिक पहचान के क्षेत्र में इसका वैश्विक महत्त्व है।

कला, साहित्य का वैश्विक प्रभाव

भारत की चित्रकला, मूर्तिकला, वास्तुकला,, संगीत (गायन ,वादन, नृत्य) और साहित्य ने अन्तराष्ट्रीय स्तर पर न केवल जबरदस्त लोकप्रियता हासिल की है, बल्कि इन कलाओं को सीखने की उत्कंठा भी वैश्विक जगत में उत्पन्न की है। भारतीय नृत्य (कत्थक, भरतनाट्यम), विभिन्न वाद्य यंत्रो (सितार, गिटार, बांसुरी आदि) के प्रभावशाली प्रयोग तथा शास्त्रीय गायन ने विश्व मे अपार लोकप्रियता हासिल की हैं। भारतीय शास्त्रीय गायन को तो वैश्विक स्तर पर न केवल मनोरंजन के लिए, बल्कि मानसिक शांति के लिए अपनाया भी जा रहा है। "भारतीय साहित्य", भारतीय दर्शन, नैतिक मूल्यों, भाषाई विविधता, विदेशों में बसे भारतीयों के अनुभव और वैश्विक साहित्य के साथ मानवीय संवेदनाओं के आदान प्रदान को दर्शाता है। ऐसा मन जाता है कि रवींद्रनाथ टैगोर के साहित्य ने पूर्व और पश्चिम के बीच सेतु का काम किया। Basham (2004)

पर्यटन, फैशन और फिल्मों का प्रभाव

हमारी संस्कृति का आदर्श वाक्य (अथिति देवो भवरू) ने हमारे पर्यटन की छाप विदेशों में छोड़ी है। यहां के एतिहासिक, धार्मिक स्थल हमेशा से विदेशी पर्यटको को लुभाते रहे हैं। भारतीय सिनेमा की बॉलीवुड और क्षेत्रीय भाषाओँ की फिल्में भी वैश्विक मनोरंजन का महत्वपूर्ण अंग बनी है। मूल्यों और मानवीय संवेदनाओं से भरी कई भारतीय फिल्मो ने विश्व में हमारी संस्कृति को प्रदर्शित किया है। पाश्चात्य संस्कृति के बढ़ते प्रभाव के बावजूद भारतीय फैशन की मांग विदेशो में बढ़ रही है। पारंपरिक भारतीय परिधान साडी तथा और भी अन्य भारतीय फैशनों को अन्तराष्ट्रीय स्तर पर विशेष पहचान मिली है।

प्रकृति के प्रति भारतीय संस्कृति

केवल मानवता से संबंधित ही नहीं, बल्कि प्रकृति के प्रति भी भारतीय संस्कृति ने हमें उत्कृष्ट संस्कार प्रदान किए हैं। भारतीय संस्कृति में नदियाँ, पर्वत, वृक्ष, पशु-पक्षी आदि को भी पूज्य माना गया है। यह परंपरा केवल अंधविश्वास पर आधारित नहीं है, बल्कि गंगा, यमुना, हिमालय, बरगद, पीपल, गाय आदि को पूजनीय बनाए जाने के पीछे सशक्त वैज्ञानिक, पर्यावरणीय एवं सामाजिक तर्क निहित हैं। इन प्रतीकों के माध्यम से प्रकृति संरक्षण, पर्यावरण संतुलन तथा जैव विविधता की रक्षा का संदेश दिया गया है। सूर्य, चन्द्रमा, पंचतत्त्व की पूजा मानव को प्रगति से जोडती है, यह एक वैज्ञानिक सत्य है। इसके अतिरिक्त सत्य, अहिंसा, सहिष्णुता, भ्रातृत्व, पारस्परिक सहयोग एवं नैतिक व्यवहार जैसे मूल्यों के माध्यम से भी भारतीय संस्कृति ने वैश्विक जगत को गहराई से प्रभावित किया है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने अपने "मन की बात" कार्यक्रम में यह उल्लेख किया है कि विश्व में कहीं भी जाएँ, भारतीय संस्कृति का प्रभाव अवश्य दिखाई देता है।

राजनितिक क्षेत्र में भारतीय संस्कृति का प्रभाव

जैन धर्म का अहिंसा सिद्धांत महात्मा गांधी के माध्यम से राजनीति में प्रतिष्ठित हुआ और उसने वैश्विक राजनीति एवं सामाजिक आंदोलनों में अपनी प्रभावशीलता सिद्ध की। Radhakrishnan (1923) मार्टिन लूथर किंग, नेल्सन मंडेला सहित विश्व के अनेक महान नेतृत्व इस सिद्धांत से प्रेरित रहे हैं। विस्तारवादी नीतियों का विरोध, अनाक्रमणकारी नीति तथा शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व की अवधारणा भी भारतीय चिंतन की प्रमुख विशेषता रही है। अनेकता में एकता का आदर्श विश्व के लिए प्रेरणा है। भारत की भाषायी, भौगोलिक एवं नस्लीय विविधता के बावजूद अनेकता में एकता का आदर्श विश्व के लिए एक महत्वपूर्ण प्रेरणा स्रोत है। राजनीतिक दृष्टि से भारत की 'लुक ईस्ट नीति' अब 'एक्ट ईस्ट नीति' में परिवर्तित हो चुकी है, जो पूर्वी देशों के साथ भारत के आत्मीय एवं सुदृढ़ संबंधों को दर्शाती है। दक्षिण-दक्षिण संवाद के माध्यम से भारतीय संस्कृति का दक्षिणी देशों के साथ व्यापक आदान-प्रदान हुआ है। पर्यावरणीय न्याय, निरस्त्रीकरण से संबंधित समझौते तथा वैश्विक समरसता की स्थापना के लिए तथा गुट निरपेक्षता की नीति के अस्तित्व को बनाये रखने के लिए आज विश्व भारत से आशान्वित है। यह सब भारतीय संस्कृति के व्यापक प्रभाव का ही परिणाम है, जो भारत को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एक विशिष्ट पहचान प्रदान कर रहा है।

निष्कर्ष

भारतीय संस्कृति का मूल आधार मानवता नैतिकता, धर्म, संयम, अहिंसा, सहिष्णुता, सहअस्तित्व जैसे मानवीय मूल्यों पर टिका है। यह संस्कृति केवल धार्मिक क्रियाओं या दर्शन तक ही सीमित नहीं है, बल्कि यह जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में नैतिक व्यवहार और मूल्य बोध को महत्त्व देती है। पराधीनता के काल में अंग्रजी शासकों ने इसे दबाने की कोशिश की किन्तु सफल न हो सके। लेकिन समय के साथ चलने और खुद को बदलने की क्षमता ने भारतीय संस्कृति को लचीला बनाया है, यह सर्वविदित है। भारतीय संस्कृति अपनी आत्मसात करने की क्षमता और लचीलेपन के कारण आज भी जीवंत है। Radhakrishnan (1923) आधुनिक भारतीय संस्कृति में बुद्धिवाद, तर्कवाद उपयोग का प्रभाव देखने को मिलता है। विज्ञान निरंतर नयी गति पकडता जा रहा है। संस्कृति के नए स्वरूप में ग्रामीण संस्कृति का शहरीकरण हुआ है। निरंतर हमारी संस्कृति में परिवर्तन जारी है। हम भी अपनी पुरानी संस्कृति के साथ नई संस्कृति को भी अपना रहे हैं, अतरू सांस्कृतिक बदलाव निरंतर जारी रहेगा। Drishti IAS (2020) ऐसी सम्भावना निरंतर कायम रहेगी। लचीलेपन की प्रवृत्ति अपनाने के बावजूद भी हमारी संस्कृति की जड़ें बहुत मजबूत हैं। विश्व भारतीय संस्कृति की ओर उन्मुख हैं। अशांति निराशा, अवसाद, मानसिक असंतुलन की स्थिति को झेलता पाश्चात्य जगत भारतीय संस्कृति में जीवन ढूंढने की कोशिश कर रहा है। भारतीय संस्कृति की जीवंतता अमूल्य है। यद्यपि भारत में ही समाज के कुछ लोगों ने भारतीय संस्कृति को अपमानित करने का प्रयास किया है, जिसका प्रभाव वैश्विक स्तर पर परिलक्षित भी होता है, लेकिन कुछ अपने दुर्बल पक्षों और पथ भ्रष्ट लोगों द्वारा संस्कृति से खिलवाड करने के बावजूद मी भारतीय संस्कृति अपने सबल पक्षों के साथ मजबूती से खड़ी हैं।

भारत की संस्कृति भारत की श्सॉफ्ट पॉवरश् है। आज अंतर्राष्ट्रीय जगत में व्याप्त हिंसात्मक दौर में जहाँ तीसरे विश्व युद्ध की आहट की बात दबी जुबान से कही जा रही है, वहीँ अपनी मानवता वादी, अहिंसावादी, नस्लीय विरोधी नीति शांतिपूर्ण सहअस्तित्व की आदर्शवादी संस्कृतियों के कारण भारत को आज भी विश्व एक आशा के रूप में देख रहा है। भारतीय संस्कृति का दर्शन, अहिंसा, अनाक्रमाणकारी, गुटनिरपेक्षता की नीति, विश्वबंधुओं की संस्कृति विश्व को नयी दिशा दिखा सकती है। अतरू यह कहना अतिश्योक्ति नहीं होगा कि भारतीय संस्कृति मानवीय ही नहीं बल्कि दैवीय संस्कृति है।

REFERENCES

Basham, A. L. (2004). The Wonder That was India (210). Picador.
Bharatdiscovery.org. (n.d.). Bhartiya Sanskriti Ka Prasar. (2026, February 26)
Drishti IAS. (2020, June 26). Bhartiya Sabhyata, Sanskrati Ka Vartman Swaroop Aur Mahatva. (2026, February 26)
Feuerstein, G. (2008). The Yoga Tradition: Its History, Literature, Philosophy, and Practice (12). Hohm Press.
Manthan Prakashan. (2018–2019). Pariksha Manthan Nibandh Manthan. Allahabad: Manthan Prakashan.
Radhakrishnan, S. (1923). Indian Philosophy (Vol. 1). George Allen and Unwin.